

श्रीसेतुबंधाश्रमयात्रादर्पण ॥

जिसमें

श्रीसेतुबन्धरामेश्वरजीके समीप के सम्पूर्ण स्थान व प्रसिद्धप्रसिद्ध तीर्थ व मन्दिर सर सरिता पहाड़ादि जोकि यात्रामें मिलते हैं उन सबका सम्पूर्ण हाल अच्छेप्रकार कहागया है

जिसको

श्रीपरमहंसाग्रगण्य बाबादूधदासने यात्रीपुरुषोंकी सुलभताकेलिये निर्मित किया है

बाजपेयि पण्डित रामरत्नके प्रबन्ध से

पहलीवार

लखनऊ

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखाने में छपी

अक्टूबर सन् १८८९ ई० ॥



सेतुबन्धाश्रमयाचादर्पण ॥

दोहा ॥

अबयहयात्रादूसरा सेतुबन्धकरभाय । जहँरामेश्वर
नाथहैं तनमनसेचल्योंधाय ॥ अहम्दाबादसेडाकवर
भयोंसवारजोरेल । अनंतपूरस्टिसनपर उतरपड़ामैं
पेल ॥ तहँसेदुसरीलैनहै गाड़ीरहेतयार । तुरतबैठिये
जायकर सीटीदईहैपुकार ॥ चारबजेतोपुगगई मन्दिर
पड़ादिखाय । तनमनहुलसाप्रेमसे हिरदयगवाजुड़ायं ॥
दुइसमयापरखुलतहै रेलडाकवरकेर । होतभोरहरेछा
बजे जातसरांसरटेर ॥ दूसरबाराबजतही खुलैरेलभई
सन्त । पहरकेभीतरपहुंचगै डाकवरमांभतुरन्त ॥ यहां
तोदर्शनकियोंहैमननिश्चययहआय । सत्यद्वारकाधीश
जी याहींरहेहैंआय ॥ ऐसीज्योतिनबेटमें मोहिंकापरी
दिखाय । जैसडाकवरमँदिरमें काहकहोंमैंभाय ॥ नक्शा
मेंतोबनायदियजोजोहैस्थान । ताकोनैननदेखकर पहिं

चानैंबुधिमान ॥ फूलशय्याजहँबनीहै शीशमहलके बीच॥। रनछोरस्वामिकेबामदिशि देखोबनानगीच ॥ हरयककोनहिंमिलतहै देखनशय्याफूल । अच्छेलोग बड़आदमी टीकटलेवैंमोल ॥ यकआनातोलगतहै तब टीकटमिलिजाय । सन्तजननकोवैसहीटीकटदेवैंभाय ॥ रनछोरजीकेपिछेओर रहेंकरबारीलोग । उनकेढिगमें पहुंचकर टीकटलेनेयोग ॥ वहांसेफिरबाहरनिकर उत्तर फाटकजाय । थोड़ीदूरसड़कपरमन्दिरसत्यभामापाय ॥ ताकेआगेपूंछकर फिरगलीदूसरआय । तहांमहलहैं राधिका देखोयात्रीजाय॥ वहँसेफिरआगेबढ़े मन्दिरे रुक्मिणिपाय । देखोमूरतनयनसे प्रेमबढ़ैहिरदाय ॥ वहांसेफिरतोलौटकर आवोगोमतीतीर । तहँमन्दिर टीकमाजिका देखोनयंनअमीर ॥ क्षेत्रइहांतोचारहैं तामें भोजनरुचीन । प्रथमहैभटजीकाशिकेर छप्पनभुजन नवीन ॥ तीसमूरतीरोजकर हैबन्धानतोभाय । हरपुरन मासीकोभई जितनेआवेंजिमाय ॥ दुसरालालदास सन्तका हैअकाशव्रतिजान । शीरापूरीलाडुवा खीर अचारमेवान ॥ पचीसमूरतीरोजकरतहांजिमावैंभाय । तिसरापाटरीराजकर तेइसमुरतिनितपाय॥ चौथाकच्चा भोजनतो हैगाड़ाधोराज । वहँजितनेचलेआवहीं भोजनकरैंसमाज ॥ एकसदावर्तहै इहांसेठबम्बईकेर । तहांकेरियहरीतिहै सुनोसन्तजनटेर ॥ चारबजेदिनरहै जब तबजावेवाकेद्वार । रातभरावहँपड़रहै पहरदिना उजियार ॥ तबतोसीधादेतहै लकड़ीघीवसमेत । वाही

केस्थानपर भुजनवनावेचेत ॥ नाहींतोफेरलेतहैं दे
निकालगारिश्राय। ऐसीरीतिकहूंनहीं मैंनेदेखाभाय॥
हैंमुरारजीव्रजभुषण सेठवम्बईमाहिं। उनसेजोसतस-
ङ्गहो याकरभेदपुछाहिं ॥ तीनदिनायहँवासकर चौथ
उजेरापांख। सेतुबन्धरामेश्वर यहांसेयात्राचाख॥ श्रं
बतोवड़ोधाजायकर तिरथनरमदादेख। सुरतबम्बई
सैरकर तबसेतुबन्धकोपेख॥ जोजोनगरवतिरथहैं परे
राहमेंश्राय। ताकोयाहीनक्शामें बनतबनतवनजाय॥
कहूँचल्योंमैंरेलपर कहूंपगनसोंयार। रेलपादड़ीगैल
की पुस्तकनक्शामभार ॥ डकवरजीसेपगचल्योंश्राय
श्रमरोठागाँव। रैनतहांबिश्रामकरभोरउठाचलापाँव॥
धर्मशालायहिठांव हैं श्रौरसदावर्तजान। नगरशहर
तोघना हैं भक्तसेठबहुमान ॥ पहरदिनाकेभीतराश्राये
श्रोड़जोगांव। जानकीदासबैरागिकर हैस्थानतोनाँव॥
तहांसदावर्तमिलत है श्रौरभक्तिभीहोता। कामधेनुतो
फिरतहै याहिप्रमारथजोत॥ श्राधसेरलोटदेतहै श्राध
पावभरदार। पङ्गतिमेंचोखाश्रहै रोटबाजरामार॥ एक
सदावर्तश्रौर है बावड़ीमहदेवमँद्र। श्राधसेरखिचड़ी
मिलैकिलोटबाजरासुँद्र॥ फिरवहँसेयकोशपर हीरात
लौंड़ीश्राय। मन्दिरबहुश्रच्छाबनापावलोटतोमिलाय॥
वहांसेफिरखानपुराको सांझतलकचलेश्राय। महिगंगा
यकनदीहैपाटबहुततोपाय॥ जैसेयमुनामायकाश्रहैकरा
रवपाट। वैसहिवाहूकरश्रहै बड़ेबड़ेनाराठाटं॥ वाहूंहै
सदावर्तयक कोइसठकरभाय। मन्दिरहैमहदेवकेर तहँ

विश्रामलोजाय॥ पांचकोश[illegible]ा गांवपड़ाहैदिखा
य। तहांधरमशालाश्रहैश्रौर[illegible]दावर्तपाय॥ पूराभोजन
मिलतदालरुनमकसमेत। जोकोईसन्तोषसेजावेवाको
है देत ॥ वहँसेयककोशसीसवा मोहिंकागांवदिखान।
दुइकोशतहँसेश्रावनी नगरमिलामीटश्रान॥ वहांधरम
शालाबनाबहुमोटाहैयार। तालकेऊपरजानलोमारग
पैहैबहार॥ तहँसेबड़ोधाचारकोशहै यमुनाबाईरानि।
खांडेरावकीस्त्री ·ताकोल्योसबजानि॥ धरमात्मातो है
बडीप्रेमीसन्तनकेर। युक्तीतोजानेनहींमुक्तीबहुहैघनेर॥
राजाश्रबहींजवान है विद्यामानसुनाय। श्रबतकतो
नहिंमिलाहै यहभीजुबानीपाय॥ मकरपूरयकनगर है
बड़ोधासेडेढ़कोश। तहँवांवासकरत हैं सदारहत सुख
पोश॥ यहांसदावर्तचार हैं तहँकेकहोंहवाल। गणप
तिमिस्त्रीएकतो तहँजोजायसवाल॥ सोनीभक्तिकां
दूसरा गेहूंलोटश्राधसेर। हरीभक्तकाशहरमें घरदे
चोखासेर॥ रावसहबकापुत्रहै खोरामलितिलोनाम।
श्राधसेरलोटदेतहै वाहूंजायेकाम॥ भूषणभक्तकाक्षेत्र
है हाथीखानदुवार। तहांबनाभोजनमिलै तुरतैपा
वतयार॥ श्रौरश्रनेकनसदावर्त हैदारियाकांभाय। पाव
श्राधपावचनातो भूजातहँमिलिजाय॥ सिद्धनाथस्थान
है बहुतप्रेमत्तहँहोय। धर्मशालादरवाजेपर उतरजाय
जोकोय॥ श्रच्छेपुरुषसंन्यासियनइनकोभुजनकराय।
भूखादूखाजोकोऊ ताहुकोपरसामिलाय॥ भजनहोत
हैमंदिरमा श्राठोपहरदिखाय। पहरपहरकेलोगतोभजन

कोनौकरभाय॥ घूमघूमकरभजनहोतालमृदङ्गबजाय। याहीभजनप्रतापसे तेजघनोहैदिखाय॥ तीनदिनावहँ रह्योंमें भंडाराभैआय। यमुनाबाईरानिजो मालपुवाका कराय॥ निरबानीवनिरंजनीइहांअखाड़ाहैंदोय। दोनों जमातजुटीरहीऔरमहन्तनजोय॥ निरबानीकोअखाड़ाहैखण्डेरावप्रबास। शहरकेदक्खिनओरहैंदेखोनयन सुबास॥ निरंजनिकेरअखाड़ा ताराम्भनाथमहदेव। हैं दक्खिनकेओरमा तहांदिखाईदेव॥ सोमचासतोमुरति हैं गिरीपुरीकहवाय। दरसपरससन्तनकेरा यहांकरो सुखदाय॥ बसाशहरहोकिलामें दरवाजाहैंचार। पानि दरवाजापछिममा पूंछिजाइयेयार॥ चापानियरतोउत्तर मा हैदरवाजानाम। लहरीपुरपूरबमहीं पूछतजावजो काम॥ कोंड़िदरवाजादखिनमा लोगकहतहैंभाय। मैं तोशहरमेंकमगया गिर्दबाहरीछाय॥ इहांपन्दरहरोज तक रह्योंनगरमेंभाय। पुण्यधर्म्मयहँकमहोवै बहुत अमावतआय॥ मैंजोइतनेदिनरह्योंताकरभेदसुनाय। पून्यमकातिकंकापड़ा नरमदागंगनहाय॥ वहांसेआयों लौटकर गणपतिसिंहसवार। रजमटफतेसिंहकोकही घोड़नकेअसवार॥ उनमोकोलैगये हैं अपनेरिसाला बीच। तहँकृष्णानँदमेजरहैं प्रेमिरिसालाबीच॥ उनसेबहुतैप्रेमभो हैंतोदयाधर्ममाहिं। दीनसवारीरे लकरढिगबम्बईकेपाहिं॥ छाआनाछारूपिया क्राया दुइजनेहोय। सोअपनायुक्तीकरीलईधरमबंहुजोय॥ अबतोगरीबजोलोगहैं उनमेंप्रेमदिखाय। बड़ेबड़े

जोहैंआदमी मद्यपुरीरहेछाय ॥ भाऊसाहबमरहटा
हैंदफेदारसवार । वाहूसन्तनप्रेममें हैंगेचित्तउदार ॥
इनतीनोंकरभाव मैं कहँतकवर्णोंयार । हैफिरकातोस
वारकर प्रेमसाधुचितधार ॥ अरुयकयमुनादासहैं
जातीपदवीपाय । लकड़ीकेरदुंकानहै खरवांमुहल्ला
केहाय ॥ उनतोबहुतैप्रेमसों कइदिनसंगतकीन। सूरत
तहँइवऊतोरेलसवारीदीन ॥ अरुशिवलालभगतअहै
बनियांकेरदुकान। वहभीप्रेमीसाधुकरसेवाकरैहैआन॥
अट्ठारादिनबादमें चल्योंहोतदोपहर। बड़ोधाकेस्टिसन
पर भयोंसवारसेहपहर ॥ सूरततकक्कायालगैसोसन्तो
लोजान। यकआदमीकालगत है सत्रहआनाप्रमान ॥
नौबजेरातकोउतरकर लालद्रवाजेपैजाय। एकधरम
शालाअहै वाहीमेंरैनिबिताय ॥ एकदिनावहँवासकरसू
रतशहरकोदेख। दुसेरेदिनदशबजेपै रेलसवारीपेख ॥
इहांसेनौआनालगै स्टीसनबलसार । तीसकोशतो
पुगगयोहोतदुपहरेयार ॥ तहांजायमैंठहर्योहै नरसिंह-
भक्तसुतार। जाकोहिन्दमेंबोलतहैं बढ़ईनामपुकार ॥
ताकरहालसुनोभई जोभक्तीजियठान ।कारबारसबछो
ड़कर रचनाप्रभुकरमान॥ द्रव्यजौनकछुपासरहि ठाकु
रद्वारावनाय। तामेंमूरतकृष्णजी अधिकप्रेमसेरचाय॥
आठपहरसेवाकरै मनआनन्दसमेत। सन्तजनाजोपहुं
चगये ताकोआदरलेत ॥ सरगुणनिरगुणदोउकरै जब
आश्रमगृस्ताय। याहीसेवनजायगा प्रभूकृपाह्वैजाय ॥
एकदिनातहँवासकर रहनीदेख्योंभक्त। बहुअंनन्दजिय

मेंउमँग धन्यबादयहिभक्त ॥ मितीएकादशिअगहनी
रहाकृष्णपक्षभाय। बारहबजेकेभीतरारेलघरापरआय॥
यहांसेफिरयकरूपिया दशआनालोजान । बम्बईतक
तोलगतहै रेलकिरायामान ॥ नौबजेउतरेआयकर खा
सबम्बईमाहिं। धरमंशालाकेबीचमाआसनलेवेजाहिं॥
होतभोरफिरजहँचहे आसनकोलैजाय । सैरकरैइस
शहरकी सबहीदेशदिखाय ॥ यहँहरदेशकेआदमी
देखिपरतहैंयार। चीजेंजोहैंपृथ्वीमा सबहीहाटबजार॥
यहिसमयाकेबीचमेंऐसाशहरहैनाहि । दिनदिनतेजीश
हरहै बस्तीबढ़तीजाहि ॥ एकओरतोसमुद्रहैतीनिओर
खाड़ीघेर । पानीकेबिचशहरयह अरुपहाड़हैढेर ॥ मैं
तोउतरयोंआयकर भूलेश्वरमहदेव । धर्मशालाअच्छो
बनोउतरयतीसुखदेव ॥ तहांअयोध्यानाथतो उतरा
रहाहैयार । हैंगेरहैयालखनऊ यहँद्वारकापधार ॥ भई
बारताउनसेतीं बोलेसुनोस्वामीजीव ।अबपुष्कराज
जायकर तबघरपहुंचसजीव॥ यहमालुमनाहींअहैकहँ
सेकौनचलीरेल । आपबतावेंतोजानलूं वहीपन्थको
झेल ॥ तबतोनक्शादिखायों बम्बईसेसबरेल ।मय
खर्चाकेलिखंदियों पुस्तकमेंजोगैल ॥ वैतोचलेगयेरेल
परमैंवहिठाईबिछाय। उनतोचलतकेय़हकहा हाथजोड़
केभाय ॥ आपजोअांबेंलखनऊ मोरेइहँठहराय। सेवा
करिहौंचित्तसे परलोकहुबनजाय ॥ मोरमकानहैकालि
का बंड़िदेवीकेपास ।महानरायनबागसे हैंझोपड़िनगि
चास॥ रामदासकापुत्रहोंजोमशहूरहैनाम। जातअगर

वालाकहैं पेशामहाजनीकाम॥ दुसरेदिनमैंपूंछ्योंअछे
अछेजनसोंयार। बम्बईमेंछापाखनासबसेकौनबड़ार॥
तबतोयहमालुमभया छपखानाबड़ाभाय। गणपति
कृष्णानामहै तीनिपुश्तचलाआय॥ ताकरंपुत्रकानो
बायरहाखूबचलायानाम। अबतोंआत्मारामजींतिसरी
पुश्तहैंआम॥ तहांआयकरमैंमिल्योंआत्मारामसोंयार।
पुस्तकनक्शादिखायों बद्रीनरायणप्यार॥ देखतआ
त्मारामजीबहुतमगनमनआन। भक्तिसचाईदीनताली
नसन्तपहिंचान॥ दोघड़िकामकोछोड़कर पुस्तकचित्त
लगाय। जानालियोनयाचरितहैंअबतककोउनबनाय॥
सेवाकीन्ह्योबहुतप्रिय औफरहारमँगाय। कीनपुजनहै
आत्माऔर प्रमात्माभाय॥ मोसोंकहस्वामीआइयेघर
मेंकरोमुकाम। छापायाकोमैंकरों मनुषहेतसुखधाम॥
खासमकानपैआपने जायमहलदिखराय। जामेंरंगांमे
जीहैं झाड़फनूसटँगाय॥ जैसेराजनकरमहलकईहजार
शीशेजात। वसेतोसबटँगेहैं हरकमरादिखलात॥ अ
रुंयकबातअजीबमैं देखीउनकेमकान। एकस्वामिकी
मुरतितो मनोसद्यारथआन॥ ऐसोप्रत्यक्षस्वरूपतो
कमउतरतहैभाय॥ मानोंसद्यारतबैठहैं सभीअंगनज
राय॥ इन्हींकीपूजनकरतहे गुरूमानहिरदाय। ऐसे
स्वामीजननते प्रीतलगावतभाय॥ यहयुक्तीहैपुरुबुली
कीविश्वासदृढाय। यासेवाकोसन्तजन मिलिहैंजरूरके
आय॥ वादिनतोमैंलौटकर आयभुलेश्वरनाथ। भोर
होतआसनसहित बासभक्तकेसाथ॥ वाहीदिनसे

लिखावना पुस्तककरशुरूकीन । दुसरेदिननक्शाहूको
लग्योंबनावनचीन ॥ आठदिनाकेभीतरा नक्शापोथि
तयार । फिरपुस्तकछपनेलगी चित्रकूटबद्रिकेदार ॥
नक्शोंकीयुक्तीचली वाहूअबछपिजाय। रातोदिनमुस्तै
दहैं आत्मारामसहायं॥ अबयहपुस्तकनक्शाकोहिन्दी
अछरछपाय। हिन्दुस्तानीनागरी जाकोकहतहैंभाय॥
फिरतोदेखाभक्तने लाड़िलेजीकादिवान्। जाकोमैंनेबना
या जक्तहेतसुखखान॥ कहयाहूकोलिखवाइये मैंछपवा
ऊंगावेगि। नइलीलामेंरागिनी अद्भुतहैगानेग॥ ताको
मैंइनकारकिय दुसरेबारतोआय। तबछपाऊंगाइसे पु
स्तकबड़िहैभाय॥ ऐसेप्रेमसेयुक्तिकीमीठेवचनसुनाय।
आठरोजमेंस्वामिजी पुस्तकलेहोंलिखाय॥ तबतकआ
पकेसामने दोउनक्शाछपिजाय। यहूदिवानकोवेगिमेंदे
होंतयारकराय॥ भक्तप्रेमकोदेखकर लग्योंलिखावेदि
वान। आठरोजकेबीचमेंलिखावायोंपरमान॥ बड़ोधासे
बम्बईतकदेख्योंमारगदेश। जैसानजरमेंआवाहैवैसहि
लिक्खाभेश॥ बड़ोधासेअरुसुरततक देशगुजरातीजा
न। राहोअच्छीपगमिलत क्षेत्रसदावर्तमान॥ सूरतसे
अबदेशतो मीहिंअजबहौदिखान। पुरुषतोभगवालँगो
टिया पहिनेहैंपहिंचान॥ अरुस्त्रीपाहिरावतो ऐसादे
ख्योंभाय। जांघतलकअककाछहै धोतीकमरबँधाय॥
चोलियायकपहिरेरहैं नंगाशिरसबदेख। काहूशिरतो
ओढ़नी बड़ेलोगबाईपेख॥ मरदतोबांधेंभागवा थोड़ा
आगेलटकाय। बाकीचूतरसबखुला यहीरीतिहैभाय॥

सूरतसेजबतीसकोश आगेआयोंयार। तबतोपहाड़व
जंगल्ल देखिपड़ाहैप्यार॥ खाड़ीसमुंद्रबहुपड़ी कोशन
करतोभाय। तामेंकहुँहलनापरै कहूंनावपरजाय॥ पग
मारगयहखराबहै चलनेनाहींयोग। रेलसवांरीअछीहै
जोखर्चासंयोग॥ अबबम्बईकेशहरको समयसंमयमें
देख। रामकार्य्यसेछुटैजब प्रभुलीलालोपेख॥ हरयक
मुल्ककेआदमी यहँदेखनमेंआय। काठियावारवकच्छ
केमड़वारगुजरातीपाय॥ सेठमहाजनहैंबड़ेहिन्दूअरु
मुसलमान। औरअंगरेजकिरिश्चियन पारसीलोगन
खान॥ सूरतसेताबम्बई उत्पतिपारसीभाय। इनहीं
लोगनजमींदरी बहुतमिलैगीआय॥ बस्तीमकानमें
क्याकहूं चौपचमहलाबनाय। सारालकड़ीपरखड़ा मो
हिंकापरतादिखाय॥ भूमियहांबहुकमरही मानोंपारस
जान। याहीसिचौपँचखड़ी ऊपरफैलपरमान॥ बम्बई
बीचपहाड़बहु जगहजगहजलमाहिं। तापरबस्तीअंग
रेजनदीनअबादकराहिं॥ औरपटावतजातहैं सिन्धु
किंनाराभाय। तामेंहोतअबादियां दिनीदिनबढ़तीजा
य॥ ऐसाबन्दरनाहिंकहूं देखासुनानयार। ताकरक्या
आख्यानकह प्रभुरचनाहैअपार॥ यहखाड़ीगहरी
बहुत अगिनबोटतीरेआयं। लागैहैंगीकिनारपर
सहजैलेवैचढ़ाय॥ ताकोतोअंगरेजोंने खाड़ीखाड़ी
केबीच। बड़ेबड़ेबन्दररचेहैं औरपेंचसेखींच॥ ताके
भीतरअगिनबोटबहुतबड़ीबड़ीआय। मालउतार व
लादकरबहुरिबिलायतजाय॥ ताकोबोलतगुदिबँदर

दिखबेलायकहूब। बम्बईमेंजोगमनहोयाकोदेखलेखूब॥ औरयहांस्थानहैंचारदेवनकेबखान। एकभूलेश्वरनाथ हैं सबसेउत्तममान॥ तहांसन्तजोजायकरआसनकरत हैंभाय। भीजनकोवेपैसरमतुरतमिलतहैंआय॥ दूसरब म्बादेविहैजाहिनामसेनग्र। तीसरबालकेश्वरअहैंमन्दि रमहदेवअग्र॥ चौथेमहलक्ष्मीअहैं बालकेश्वरसेनेर। इनचारोंकेदरशहैं रचनाभक्तनकेर॥ तहांअढ़ाईमास तोबासकियोंहैभाय। रातदिनापैसरमंकरपुस्तकतीनछ पाय॥ माघसुदीकीचौथको फिरकीन्ह्योंमैंपयान। साढ़े दशबजेदिनमहींरेलसवारीजान॥ आयकेथानानगर में उतरपर्य्योंहैभाय। जहांअनंदरामभक्तहैंसेवकप्रेमी दृढ़ाय॥ दुसरेदिनसुदीपंचमीजोवसन्तकहवाय। अज बअनन्दीदिनरहाबारहबजेरेलपायं॥ चारबजेपहुंच्यों भईपूनानगरमैंभाय। देखीरचनानगरकीसातबजेरेल पाये॥ आठबजेतोरेलपर चढ़बैठोंभाईसन्त। भोरहो तशोलापुरउतर सदरचल्योंहैतुरन्त॥ वहँसेगयोंबजार में बलवंतरावकेपास। वेपण्डितपरबीणहैं बम्बईमेंरहे पास॥ उनकेयहांउतरपर्य्यों सेवाकीनहैखूब। होतदो पहरबहुव्यञ्जन बनवावेअतिहूब॥ अपनेभंडारमेंलैग यो पूजनकीनीहैमोर। जसंप्रमाणहैवेद्रकर धूपचन्दन कीखोर॥ ताकीबाईलक्ष्मी परसनलागीहैआय। गरमा गरमपकानको छिनछिनधरतीभाय॥ गृहस्थाश्रमऐस हिचही जसबलवंतरावकीन। तबमृत्युलोकमेंआयकर बैकुण्ठोलैलीन॥ सांझहोतमैंयहकह्योंसुनोपियारेभक्त।

अतिआनन्दीभईहै तुम्हरीसेवाशक्त॥ अबतोमोहिंका
रेलपर देवसवारीकराय। फिरकबहूंमिलिजाउँगातुम्ह
रीप्रेमबँधाय॥ बहुतकहादुइरोजतोस्वामीकरोअनन्द।
ताकरउत्तरदीनमैं चितरामेश्वरबन्द॥ सातबजेमोरे
साथमें स्टेसनपरआय। आठबजेकेभीतरै रेलसवारक
राय॥ होतभोरगंगकृष्णाजहँस्टेसनरेल। उतरपखोंहे
आयकर देख्योंगंगकोखेल॥ तहँस्नानाकियोंभईबहुत
अनन्दमनाय। भोजनबनातुरन्तही रोटीदालसुहाय॥
पायभोजनाफिरआयकर स्टेसनाढिगभाय। साढ़ेग्यारह
केबजेरेलपहूंचीआय॥ तापरभयोंसवारहै एकबजेराय
चूर। तहांरेलसेउतरकर बीसमिनटसुखपूर॥ यहांसे
अबगाड़ीदुसरि हातामद्रासकीआय। बम्बईहाताकी
गड़ी इसहदसेपलटाय॥ मदरासहाताकीगड़ीलेयात्री
बैठाय। बम्बईहाताकीगड़ीलेतहैलोगनचढ़ाय॥ याही
सेउतरनपरतहै बीसामिनटवाहिठाँय। जबआईमदरास
तेतुरितसवारीपाय॥ तहांसेगाड़ीचलीहै होतभोरपहुं
चाय। जाकोजक्शनअरकोना कहतलोगहैंभाय॥ यहां
पैगाड़ीसेउतर पुलचोबीचढ़जाय। दहिनेबाजूउतरके
गाड़ीमन्द्रापाय॥ तुरतैटीकटमिलिजबै बैठजायगाड़ी
बीच। छः परमुँगरीज्योंपरै रेलदईसीटीचीच॥ सात
बजेदिनकेभितर शिवकाञ्चीमेंआय। तहांतोगाड़ीसे
उतरएकमीलचलजाय॥ चाहेपगमारगचले चाहे
गाड़ीबैल। स्टेसनपररहतहै बहुतकगाड़ीगैल॥ वहां
जायकरअसनलै औभोजनकोबनाय। खबअनन्दसे

जिमनकर शयनमेंचित्तलगाय॥ दोघंटाकेबादफिरसरै
करीपुरीजाय। सांझहोतदरशनकरैअजबरोशनीपाय॥
रचनामंदिरकोइलकररंगरंगहैयार। ताकोनक्शामेंदेखो
खूबनयनविचधार॥ सप्तपुरीमेंयहअहै तीरथकरबेयो
ग। एकरात्रीवासकरभोरभयेचललेलोग॥ तीनमीलविष्णु
कांचीपूरबओरमेंआय। धर्मशालाताकेभितरउतरपरो
सुखपाय॥ वहीकेनिकटतलावहै महातिरथलोजान।
फिरमन्दिररचनाभई घूमिघूमिदेखोज्ञान॥ ताकेपीछे
मँदिरमें जायदरशकरोभाय। प्रथमनरसिंहविराजते
फाटकसामनेआय॥ फिरतोबायेंओरमें पैकरमामेंजाय।
सीढ़ीऊपरहैंबनी तापरतुरतचढ़ाय॥ तबमूरतिविष्णू
मिलै बहुतविचित्रवितान। डेढ़हाथऊंचीअहै देखिकै
नयनजुड़ान॥ एकरात्रितहँवासकर चारबजेचलदीन।
ध्यानस्नानसेछुटीलै मगस्टेसनलीन॥ एककोशस्टेसन
है शिवकाञ्चीजाकोबोल। सातबाजतेरेलतो आयपहुं
चतीहैडोल॥ तहांसवारहोरेलपर चलदेवमोरेभाय।
जङ्गलपेटास्टेसनपर उतरपरोतुरताय॥ तहँवांसेपक्षी
तिरथको पांचकोशचलिजाय। तहांजायकेदेखलो दो
पक्षीआवेंभाय॥ वहांसेफिरतोलौटकरै जङ्गलपेटपैआ
य। श्रीडम्बरमहदेवपर चारबजेपहुंचाय॥ तहँदर्शन
महदेवकर हैअनन्दसोंभाय। एकदिनाआरामकरचार
बजेरेलपाय॥ रातभरातोरेलपर चलेजावसुखसाज।
होतभोरहरेकेसमयजंग्शनतृचनापलिवाज॥ तहांदूस
रीरेलतोखड़ीरहतहैयार। तापरतुरतसवारह्वैरङ्गज़ीटिस

न उतार॥ तहँसेहैतोतीनमिल श्रीरङ्गजीस्थान। गाड़ी
बैलवघोड़ेकी तुरितमिलतहैंआन॥ सातबजेदिनकेच
ढ़ेश्रीरंगपहुंचेजाय। गृहस्थीपण्डाकेइहां साधुक्षेत्रठह
राय॥श्रीरंगकेरामँदिरतो अतिउत्तमहैभाय। नक्शामें
रचनाकिया देखोध्यानलगाय॥ श्रीरंगजीमेंमुरतहै बि
ष्णूजीकीभाय। बहुतबड़ीमूरतअहै शयनकरतदेखोजा
य॥ औरदेवताबहुतहैं पैकरमामेंरचाय। खम्भहजार
कीकचहरी हाताभितरदिखाय॥ तामेंकचहरीलगत है
विष्णुस्वामीकीदेख। रचनाऐसीहैबनी नैननकरत है
रेख॥यहमन्दिरकीरचनाकोजोचाहोभलदेख।यकपण्डा
कोसाथलोतवरचनाकोपेख॥धन्यबादवाहिभक्तकोजिनर
चनायहरचाय। ज्ञानध्यानसेसमझलोवाहूरहेनभाय॥
सातबजेरात्रीसमय दर्शनबहुविधिहोत। तरहतरहकी
रोशनी पेखबेआवतजोत॥ ताकेपीछेचलदियों स्टेसन
परआय। बारहबजेगाड़ीधुवांआतुरपहुंचीधाय॥तापर
भयोंसवारमैं रेलचलीमोरयार। होतभोर मद्रासिस्न
दीनहैरेलउतार॥ अबतोरेलइहांसे तूर्तीगरीकोजाय।
रामेश्वरकोपगसड़क पक्कीपरीहैदिखाय॥ यहांउतरकर
यकदिवस मद्राशंहरमेंबास। लालाब्राह्मणक्षेत्रहै नदी
किनारेपास॥ साधूकेरधरमशाला अलगबनाहैजान।
तहांकछुकअन्नदेतहैं चावलचोखामान॥ दूसर धरम
शालातहां गृहस्थनबासबनाय। तामेंयकपैसालगै जो
कोइरहताजाय॥ मैंवाहीधरमशालामें उतर्योंजायअन
न्द। माधोरामजोभक्तहै नातिललाभक्तचन्द॥ उन

जिमनकर शयनमेंचित्तलगाय॥ दोघंटाकेबादफिरसरै करीपुरीजाय। सांझहोतदरशनकरैंअजबरोशनीपाय॥ रचनामंदिरकोइलकररंगरंगहैयार। ताकोनक्शामेंदेखो खूबनयनविचधार॥ सप्तपुरीमेंयहअहै तीरथकरबेयो ग। एकरात्रीवासकरभोरभयेचलेलोग॥ तीनमीलविष्णु कांचीपूरबओरमेंआय। धर्मशालाताकेभितरउतरपरो सुखपाय॥ वहीकेनिकटतलावहै मह्वातिरथलोजान। फिरमन्दिररचनाभई घूमिघूमिदेखोज्ञान॥ ताकेपीछे मैंदिरमें जायदरशकरोभाय। प्रथमनरसिंहविराजते फाटकसामनेआय॥ फिरतोबायेंओरमें पैकरमामेंजाय। सीढ़ीऊपरहैंबनी तापरतुरतचढ़ाय॥ तबमूरतिविष्णू मिलै बहुतविचित्रबितान। डेढ़हाथऊंचीअहै देखिकै नयनजुड़ान॥ एकरात्रितहँवासकर चारबजेचलदीन। ध्यानस्नानसेछुटीलै मगस्टेसनलीन॥ एककोशस्टेसन है शिवकाञ्चीजाकोबोल। सातबाजतेरेलतो आयपहुं चतीहैडोल॥ तहांसवारहोरेलपर चलदेवेमोरेभाय। जङ्गलपेटास्टेसनपर उतरपरोतुरताय॥ तहँवांसेपक्षी तिरथको पांचकोशचलिजाय। तहांजायकेदेखलो.दो पक्षीआवेंभाय॥ वहांसेफिरतोलौटकै जङ्गलपेटपैआ य। श्रीडम्बरमहदेवपर चारबजेपहुंचाय॥ तहँदर्शन महदेवकर हैअनन्दसोंभाय। एकदिनाआरामकरचार बजेरेलपाय॥ रातभरातोरेलपर चलेजावसुखसाज। होतभोरहरेकेसमयजंग्शनतृचनापलिवाज॥ तहांदूस रीरेलतोखड़ीरहतहैयार। तापरतुरतसवारह्वैरङ्गज़ीटिस

न उतार॥ तहँसेहैतोतीनमिल श्रीरङ्गजीस्थान। गाड़ी बैलवघोड़ेकी तुरितमिलतहैआन॥ सातबजेदिनकेच ढ़ेश्रीरंगपहुंचेजाय। ग्रहस्थीपण्डाकेइहां साधुक्षेत्रठह राय॥श्रीरंगकेरामँदिरतो अतिउत्तमहैभाय। नक्शामें रचनाकिया देखोध्यानलगाय॥ श्रीरंगजीमेंमुरंतहै बि ष्णूजीकीभाय। बहुतबड़ीमूरतअहै शयनकरतदेखोजा य॥ औरदेवताबहुतहैं पैकरमामेंरचाय। खम्भहजार कीकचहरी हाताभितरदिखाय॥ तामेंकचहरीलगत है विष्णुस्वामीकीदेख। रचनाऐसीहैबनी नैननकरत है रेख॥यहमन्दिरकीरचनाकोजोचाहोभलदेख।यकपण्डा कोसाथलोतबरचनाकोपेख॥धन्यबादवाहिभक्तकोजिनर चनायहरचाय। ज्ञानध्यानसेसमझलोवाहूरहेनभाय॥ सातबजेरात्रीसमय दर्शनबहुविधिहोत। तरहतरहकी रोशनी पेखबेआवतजोत॥ ताकेपीछेचलदियों स्टेसन परआय। बारहबजेगाड़ीधुवांआतुरपहुंचीधाय॥तापर भयोंसवारमैं रेलचलीमोरेयार। होतभोर मद्रासिस दींनहैरेलउतार॥ अबतोरेलइहांसे तूतागिरीकोजाय। रामेश्वरकोपगसड़क पक्कीपरीहैदिखाय॥ यहांउतरकर यकदिवस मद्राशहरमेंबास। लालाब्राह्मंणक्षेत्रहै नदी किनारेपास॥ साधूकेरधरमशला अलगबनाहैजान। तहांकछुकअन्नदेतहैं चावलचोखामान॥ दूसर धरम शालातहां ग्रहस्थनबासबनाय। तामेंयकपैसालगै जो कोइरहताजाय॥ मैंवाहीधरमशालामें उतर्योंजांयअन न्द। माधोरामजोभक्तहै नातिललाभक्तचन्द॥ उन

कीन्ह्योहैंप्रेमबहुबैठआयसतसङ्ग। औरकहास्वामीसुनो
यहदेवलबहुरंग॥ताकोदेखकेनक्शामेंआपतोलेवबनाय।
ऐसामान्दिरकहुंनहीं यहांकोभूपरचाय॥ ताकोदेखविशे
षकर अजबदिवलहैभाय। महादेवअरुपारबति दोनों
मँदिरबनाय ॥ दहिनेबाजूमेंमँदिर हैमहदेवकाथार।
बायेंओरमेंदेवलतो पारबतीकाबहार ॥ तामन्दिरकोब
नादिया देखलेवसबकोय। वाहूराजानाहरहेवंशराज्यगये
खोय॥ नामकीर्तितोरहगई औरकछूनहिंबांच। याहीसे
सबसमुझलो बहुतनसाजोनाच॥ भोरभयेअबपगमर
ग चलदीन्ह्योंहैभाय। सड़कतोपक्कीबनीहै वृक्षदोउओर
सुहाय॥ मद्रासेबारहमइल त्रिपुनानमहैक्षेत्र। वहांसे
फिरबारहमइलमुतनन्दननामक्षेत्र॥ क्षेत्रयहांवाकोकह
त धर्मशालाबनाभाय। तामेंमुसाफिरयात्री उतरतहैं
सुखपाय॥ तहांबजारनगरबसा जोचाहोलैलेव। और
राहमेंनगरहैं तहांकछूनमिलेव॥ दुसरेनगरइहांके ऐसे
नहींहैंयार। काहूद्वारेजगहहो तहँदेडेराडार॥ याहीक्षेत्र
नकेसिवाऔरठिकानानाहिं। तातेभक्तनधर्मशलाराहंन
माहिंबनाहिं॥ मुतनन्दनसेफिरभई मनमद्राहैक्षेत्र। बा
रहमीलकड़ाअहै नैननदेखोक्षेत्र॥ वहांसेफिरतोचलि
दियोंहोतभोरहरीजून। फूदीकोनाक्षेत्रहै आठमीलचित
गून॥ वहांतेफिरतोपरमगुडी क्षेत्रआठमीलजान। तहां
आयकरअसनालिय भोजनबनसुखमान॥ रात्रीवहां
निवासकर भोरहोतउठिचाल। चौदहमीलपैक्षेत्रहै
पलुवरनामतोख्याल॥ तहांआयकैअसनभै द्रुशबजे

दिमकेमाहिं। भुजनअनन्दसोंपायके रामनाथपुरघाहिं॥ रात्रीवहांनिवासकर भोरहोतचलदीन। दुर्बसैनजोतिर थहै तहँवाँआसनलीन ॥ तहांजायकरदेखलो मँदिर बनादुर्बसैन । लङ्कफतेकररामजीलौटइहांकियोशैन॥ प्रथमतोमन्दिरकेभितर मिलतरूपजगदीश। ताके बायेंओरमा दुसरमँदिरहैदीश ॥ तहांदुर्बसैनमूरती शयनकरतलोपेख। बहुतबड़ाहैरूपतो तनमनसेलो देख॥ क्षेत्रधरमशालायहां दोनोंहैगाभाय। यकरामरा जाकाअहै मलेवारकाभाय॥ तहांसदावर्तपूरहै आध सेरचोखापाव। रामरसअमिलीसागकछु दालसरिष मिलजाव ॥ दूसरक्षेत्रहैअरुभई यकपावचोखादेत। भोजनपूराहोतहै दोनोंजगहजोलेत ॥ एकरातइहांबा सकर भोरहोतचलंदीन। आदिसेतुयककोशहै दक्खि न ओरमेंचीन ॥ तहँसेबेड़ीजातहै रामेश्वरकोभाय। सातआनाकायालेतहै खाड़ीखाड़ीलेजाय॥ तहँसेफिर हैसातामिल रामेश्वरकामंद्र। गाड़ीबग्घीसबमिलै चहेपै दरचलसुन्द्र ॥ बारहबजेतोबोटपर बैठजावगेभाय। जोहवाअच्छीबहतहै सांझतलकपहुंचाय ॥ नहिंतो दशबजेरातको पहुंचैजायकेपार। चौदहकोशलगतहै हरभोलाखाड़ीउतारै॥ तिरपल्लमताकोकहत क्षेत्रबना हैयार। सदावर्तयकरोजतो मिलताहैगासुतार॥ राम रावकाक्षेत्रहै डिप्टीरहाहैभायं। अबतोवहमृत्युलोकते गाबैकुंठसिधाय॥ ऐसाकैगाबँधानहै चलाजातहैभाय। औरमहाजनसेठतो सड़कबनवायनआय॥ एकदिना

यहँहँवासकर दुसरेदिनबोटपाय । तापरभयोंसवारमें भो
रहोतखुलिजाय ॥ बारहकोशतोचालिश्रई रतनागरकि
नराय । सन्ध्यासमयतोश्रायकेपहुंचगईबरिश्राय॥तीन
मीलबाकीरहाहवाचलीबहुजोर। अरुअँधियाराहोगया
मांझिकहैकरजोर ॥ अबचलनेकोसमयनहिंहवाबहुतहै
सन्त । भोरहोतपहुंचाइहों रामेश्वरमेंतुरन्त ॥ तबतोमैंक
हछोड़दे लंगरबोटमिलाय । लोहालागतछोड़ना भोरहो
तपहुंचाय॥वहांरातकोसमुद्रमेंलहरैंबहुतदिखान ।भोर
होतखोलतभया दोघड़ीदिनचढ़आन ॥ तहांउतरकर
देख्योंहैसेतुनिशानीभाय। महोदधीअरुरत्नगिरिबीचमें
सेतुदिखाय ॥ ताकोंबनायोंनक्शामें देखोमनचितलाय ।
सड़ककीऐसीदिखपड़ैपानीउपरउतराय॥अरुपथरनके
टूकड़ाअगलबगलपड़ेयार।फिरतोगेटलमँडफपुरटापुब
जारदिखार ॥ अबयहटापूबारहकोश केरापड़ाहैआय।
याहीकेऊपरदेवलहै रामनाथकाभाय ॥ मोकोसन्तनलो
गको दोदिनबेजलपान । बोटकेऊपरबीतगै सबकोदुः
खचेताने ॥ तीनमीलपरआयकर बोटकिनारेतिरान ।
तहांउतरकरभुजनभे चारबजेतोचलान ॥ तीनमीलच
लनापड़ा क्षेत्रएकमिलाआय । आसन्तकीन्ह्योहैतहां सु
खआनन्दीपाय ॥ भोरभयेतहँसेउठ्यों तीनमीलचलआ
य। खाकचौकबैरागियन देखिपड़ाहैभाय ॥ वहांजायद
र्शनकियों सबनारायणरूप। भीषमदासमहन्तहैं बड़दी
नतास्वरूप ॥ वहांसेफिरचलताभयोंपण्डनकेरेमकान।
यात्रीउतरनकहँबनेदहिनेबायेंदिखान॥ तबतोफिरबायें

दिशामिलदशनामीअखाड़। तहांनरायणपुरीजहिंमहं
तसुखखांड़॥ उनतोबुलायोप्रेमसे ओंकारशब्दसुनाय।
तहँवाँपरमैंजायकर नमोनरायणपाय॥ फिरवहँबागमें
पहुंचके आसनतहँवाँलीन। रंगरंगकेसन्तसब आयमि
लेपरबीन॥ दुसरेदिनसबसन्तकर भंडाराकरवाय। क
ह्येव्यञ्जनअरुपके दोनोंप्रभुनेरचाय॥ औरकृपाप्रभुकी
भई वाहिसमयसेंआय। ताकरवर्णनसबसुनो हैप्रत्यक्ष
कलाभाय॥ यकसेठिनिगुजरातकी आयअखाड़ेबीच।
सबसन्तनकेदरशकरि बैठगईप्रेमसीच॥ बोलीसुनोम
हन्तजी कछुइच्छामोरिमान। लाडूचूरमाकरबनै सन्तन
भुजनप्रमान॥ तुरतसमानमँगायके धरिदीन्ह्यासिहैंआ
य। देखोलीलाप्रभुभई सभीपदार्थजुटाय॥ महप्रसाद
मिष्टानपुरि दालतरकारीअचार। सबसन्तनभोजन,
करीतवहूंनचुकाभँडार॥ दुसरेदिनफिरसधुनको दीन
महंतजिमाय। बाकीजोकुछरहगया कँगलनदियबँट
वाय॥ देखोयारोप्रभुकृपा सन्तनपरअसहोय। जोकोइ
शांतीरूपहो ताकेढिगरहेंजोय॥ अवरचनारामेश्वर
सुनोचित्तधरिलोग। जोजोअबप्रत्यक्षहै ताकोवर्णन
योग॥ मन्दिरबहुतबड़ाअहै रचनाविविधविधान।
रामनाथपुरभूपजो बनवावारँगखान॥ ताकेभीतरलिङ्ग
है सवाहाथउँचभाय। दूरसेदर्शनहोतहै कईखंडबिच
पाय॥ कईखण्डकेसबबसे अँधियाराकछुपाय। तासे
लिङ्गसम्पूरणा लोगननाहिंदिखाय॥ ताकोएकउपायहै
सुनोलोगसबकोय। दोयकपैसाकपूरलेदर्शनकोचालि

होय ॥ जायपुजारीकोदेवे वहकपूरकोभाय। तबवहबारै आरती पिण्डीसाफदिखाय ॥ जोकपूरनाहींलिवे पहुंचै द्वारपैजाय। यकपैसादेपुजारिको आरतिकरनेउपाय ॥ तुरतपुजारीआरती करतमँदिरकेबीच। दर्शनखूबैहो तहै सुनोयात्रीखींच ॥ जलगंगोत्रिजोपासहो वहतो चढ़ैयहिभांति। होतदुपहरेकेसमयजलचढ़नेकीघात ॥ पण्डाकोअपनेसाथले रुपयादशआनापास। जायमंदिरकेभीतरा नौकरअँगरेजकेपास ॥ ताकोदेवेरूपया दशअनापैसकोयार। तबवहजानेदेभितर जलपिण्डी परधार ॥ जलचढ़ायपूजनकरैबाहरआवेभाय। ब्राह्मण औरपुजारिको पुण्यकरैचितचाय ॥ जोजलपासमें ना होवेताकीसुनोतदबीर। पण्डालोगनकेइहांजलतोरहत गँभीर॥ सौरुपयाकासेरभरजलदेतेहैंभाय। यहिहिसाब सेजोचहेलेलेवेवहिठाय ॥ तेहिपीछेफिरअरुमँदिर दुसराबनाहैभाय। वहांपारबतिमुरतिहै देखोनयनअघाय॥ घूमघूमकेमँदिरमेंरचनादेखविचित्र। सभीदेवअस्थपि तहैं देखोभायचरित्र ॥ दुसरेदिनकेभोरउठि आसनपर सेभाय। रामझरोखाडेढ़कोश पूरुबउत्तरजाय ॥ ताके ऊपरचढ़िजवे लीलाअजबहैभाय। लिङ्गाकारजोटापु यहसिन्धुकेमाहिंदिखाय ॥ बारहकोशलगावतेयहटापू सबकोय। रामझरोखसेदेखिये अद्भुतलीलाहोय ॥

वृत्तान्तवार्तिक ॥

यह रामझरोखा बड़ा ऊंचा टीला रहा जब राम

चन्द्रजीने लङ्काको फतह कियाऔर दललौटातो आप उसटीलेपरबैठकर सब छोटेंबड़ेकी ओर देखा व बिदा करते भये जिसने जैसाकाम लड़ाई में किया उसको वैसाही फल दिया॥

दोहातुलसीदासजी॥

राम झरोखे बैठके सब का मोजरा लेयँ।
जाकी जैसी चाकरी ताको तैसा देयँ॥

रामझरोखेका दर्शनकरके आसनपरलौटआवे फिर तीसरेदिन धनुषतीर्थ की यात्राकरे रामेश्वर नाथ के मन्दिर से सातकोश पश्चिम व दक्खिनके कोने परहै जहां दोनों समुद्रयाने रत्नागर पश्चिमसे आया और महोदधि पूरुब से दोनोंसंगम हुयेवहांपर रामचन्द्रजी नेतीनरोज आसनकरके समुद्रसे राहलङ्काको मांगा जब नहींहाजिरहुआ तब लक्ष्मणजीने धनुषबाणउठा या कि अभीजलसमुद्रकासुखादूं उससमय तमामजल खौलनेलगातबसमुद्रआकरहाजिर हुआ और चरणप कड़ाकिमेरीमहिमा न घटाइयेयहवहीसेतुहै और लङ्का से लौटती समय तीन जगहसेतुको काटदिया वह सब दिखलाई देता हैं.ध.हरभोलाकी खाड़ी में तीन कोश तक पत्थरका सेतुदिखाई देता है जबजहाजपरसवार हो तब सेतुको देखोसन्तो गृहस्थो सुनो उससमयका सेतुबना है व धनुष तीरथपर संगमका स्नानहोता है वहां सायां वृक्षइत्यादिका कुछनहीं है मैदान बालूका है किनारा समुद्रका है रत्नागरका पानीस्वाह है और

महोदधिकापानी सब्जरँगलिये है दोनोंकामिलानवही धनुष तीरथ है वहांसेलौटकर डेढ़कोशपर मुकुन्दराम तेलीका क्षेत्र है वहांबाजारहै पहुंचकर ठहरजावे सबेरे चलकर रामनाथमें पहर दिनचढ़े पहुंच जावे भाइयो तीन मुक़ाम इहां मुख्य हैं उससमयका सेतु जो रामचन्द्रजीने बंधवाया है पहिले हरभोलाकी खाड़ीमेंजहाजपर सवारहो तो बायेंओर निगाहकरे पत्थरकासेतु साफ़नजरआई देता है और धनुषतीरथ का जो सेतु है वहबहुत चौड़ा है उसके ऊपर बालू पटगया है और बालू दिखाई देता है और जहांकटा है वहांपर दोनों समुद्रकी लहरें आकरटकरखाती हैं और हटजाती हैं तीसरा गन्दमादन पहाड़हनुमान्‌जी लाये हैं उसको रामचन्द्रजीने स्थापित किया है उसके ऊपर पिण्डी महादेवजीकी स्थापनाहुई है यहवहीपहाड़ है जोबारह कोशका गोलसमुद्र में है और उससमयाका न तो पिंड महादेवका है न मन्दिर रामनाथकाहै यह मन्दिर जोकिविद्यमान है रामनाथपुरके राजाकाबनवायाहुआ है आबादी बहुत नहीं है पण्डालोगोंके मकानयात्रीके ठहरनेके लिये बहुत हैं और बाज़ार है उसमें दूकानदार बसते हैं और जाबजासमुद्रके किनारे साधूलोगों नेमन्दिर व कुटी अपनेरहनेको बनालियाहैबाकीजंगल बबूलका है और झाड़ी हरएक क़िसम की हैं यहसब देखकेजितनेदिन इच्छाहोरहे यहां शरदीबिलकुलनहीं होती बल्कि माघ पौषमें गरमी होती है चाहै रातको

नँगेपड़ेरहो इस यात्रामेंजाड़ा गरमीबरसात जबचाहो चले जावो बहुत कपड़ा कालेनाज़रूर नहीं है केवल एक बिछावन और एक चादरा व एक कुरता या अँगरखा चाहिये व लोटा डोर और बरतन मिट्टी का बराबर मिलताहै चाहे बरतन न ले और दूकानंदारभी थाली बटुली तवा देते हैं—अब मैं शिवरात्रीका मेला करके रामेश्वर नाथसे लौटा हरभोलाकी खाड़ी जो तीनकोशकी है जहाज़पर उतरकर एक रात्री राह में ठहरकर दूसरे दिन रामनाथपूरमें पहुंचा वहांपर बैल गाड़ीकी डाकपर सवारहोकर एक दिन रातमें मद्रा पहुंचा यहां से रेलपर सवारहुआ तो एक दिन रातमें शोलापुर पहुंचा इहां एक दिन मुक़ाम करके रातको रेलपर सवारहुआ दशबजे दिनकोमनवाड़की स्टीसन पर उतर पड़ा फिर इहांसे चारवजे जो बम्बईसे रेल आई उसपर सवारहुआ तो दूसरेदिनदोबजे जबलपूर पहुंचा वहांपर ठहरगया बाद दशबजे रातको रेलपर सवारहुआ तो मिरजापूरमें बाराबजे पहुंचे बादकोमिरजापुरमें रेलपर सवार हुआ तो उसी दिन बाराबजे रातको अयोध्याजीमें पहुँचे यह राह अति सुगम है और जाते समय जो राह दुर्बसेनसे बोटपरकी दिखाई है वह बहुत खराब व कठिन राह है और महाराष्ट्र देश तक सदावर्त्त आनन्दपूर्व्वक मिलताहै द्राविड़देशसे दयाधर्म्म कम है दूर२ पर सदावर्त्त मिलता है कहीं पाव कहीं आधसेर चावल मिलता है अब बम्बई

से फिर हाल देशोंका लिखाजाता है बम्बई से शोला-पूर तक महाराष्ट्रदेश है चालचलन और पोशाक और भक्ती बहुतअच्छी है और विद्या संस्कृत विशेषकरके है और हिन्दी विद्या महाराष्ट्र में दूसरीहै कुछतो हिन्दी अंक्षर जिसको पूरुबमें हिन्दी कहते हैं और कुछ अक्षर गुजराती मिले हुये रहते हैं वही मरहटी विद्या कहलाती है बाकी अब विद्या उरदू व अँगरेज़ी की अँगरेज़ों ने फैलाया है लोग वाकिफ़ होतेजाते हैं यहां उरदू विद्या बहुतकम है और पोशाकस्त्रियों का यह है कि सारी बीसपचीस हाथकी पहिनती हैं आगे चुनाव बहुत होता है और एक लांग बांधे रहती हैं और शिर खुलारहता है और बाल बहुत बड़े होते हैं और चूड़ियां कांच और चांदी की पहिनती हैं और जेवर तरह २ का होता है और एक टीका सुर्ख रोरी का माथपर देतीहैं और टिकुली व सेंदुरका बिलकुल रवाज नहीं है और स्त्रियांबहुत स्वरूपवान् व विद्वान् होती हैं और इहां स्त्रियां शरम व परदा नहीं करतीं बड़ा आदमीहो ख्वाहछोटा और मर्दकापोशाक ऐसाहै कि पगड़ीरंगीनबँधीहुई हरएक शिरपररखते हैं और अँगरखा गांठतक पहिनते हैं और धोती लम्बी पहिने रहते हैं एक कांछबंधीहुई दूसरी लटकी हुई और रुपट्टा कांधपर ख्वाह बग़लमें रखते हैं शोलापुरसे थोड़ीदूर आकर दूसरा देशमिला यानी द्राविण देश शुरू होगया बोली और चाल बदलगई बहुत

खराब बोली सुनने में आई बहुत करुई मालूमहोती है समझमें नहींआती राक्षसी स्वभाव देखपड़ा यारो सुनो स्त्रियोंकी सूरत काली देखपड़नेलगी और पोशाक याने धोती गांठ तक पहिनती हैं और फिरकमर से नीचे जांघतकउसी धोतीको चुनकरामिस्ल चुनावट जामेके रखती हैं थोड़ीसी धोती शिरपर डाललेती हैं या गले में पेट और छाती खुला रहता है और चूरियां बहुत कम पहिनती हैं और कानकीलहर ऐसी बढ़ाती हैं कि गरदनपर पड़ी रहती है उसमें छल्ले मोटे २ रंगबरंगके पहिनेरहतीहैं और कोई २ तरकी की तरहसोने या चांदीका पहिने रहती हैं और नाक में कील सोनेकी पहिनती हैं और बदसूरत होती हैं सफाई बहुत कमरखती हैं और मर्द लोग नंगे रहते हैं भगवा याने लँगोटीबांधते हैं जब बाहर को चले तो एक कपड़ा चूतड़पर लपेट लेते हैं और शिरके ऊपर चुरकी रखते हैं शिरमुड़ाये रहते हैं और खड़ा तिलक आचारियों की तरह धारण किये रहतेहैं और मिरजई बड़े बड़े आदमी लोग धारण करतेहैं क्योंकि बारामहीना गरमी पड़तीहै और वर्षा कुवारसे पौषतक होतीहै और आमिष भोजन करते हैं और ताड़ी मर्द व औरत सब पीते हैं क्योंकि ताड़ व नारियल के वृक्ष बहुत हैं इन्हीं दोनों वृक्षोंसे ताड़ी निकाली जाती है और इसीताड़ीका गुड़भी बनताहै और धानकी फसिल बारहो मास होतीहै एक ओर

काटाजाता है दूसरीओर गाड़ा जाताहै एकओर पक रहाहै और बालूकी ज़मीनहै फिर आरकोना से तैलङ्ग देश देखपड़ा आदमी बहुत काले और धोती स्त्रियां जैसा द्राविड़ देशमें पहिनती हैं वैसाही देखाहां इतना फरक़ देखनेमें आयां कि नाक दोनों ओर छेदाये रहतीहैं उसमें दोनोंओर कीलसोने की और बीच में बुलाककी तरह छोटी नथुनी पहिने रहतीहैं उसमें मोती पड़ा रहताहै और मर्दकी पोशाक जैसीकि द्राविड़ देशमेंहै वैसीही है और इहांसे रामेश्वरतक चालव्योहार इसी माफिकका है हिंदू व मुसल्मान में केवल इतना भेदहै किहिंदू चुरकी रखाते हैं और मुसल्मान दाढ़ी रखाते हैं चुरकी नहीं रखाते और कुछ भेद नहीं है और शिवरात्री का मेला रामेश्वरनाथ में बड़ाभारी होताहै अयोध्याजीसे रामेश्वरनाथतक का खर्च लिखा जाताहै कि अयोध्याजी में रेलपर १॥−) की टिकटले कर सवारहो और श्रीकाशीजी में उतरकर दरशपरस करे फिर काशीजीसे १)॥। की टिकटलेकर नैनीमेंउतरे नैनीसे२॥।≡॥) की टिकट लेकर जबलपूरमें उतरे जबलपूर से ५॥।≡) की टिकट लेकर मनवाड़ में पहुंचे वहां से शोलापूर तक ३॥।≡) लगताहै और शोलापूर से कृष्णा गंग तक १॥।=) और इहां से बालाजी को जोजाना चाहेतो −॥) कीटिकट लेकर रैनकुण्डापर उतर पड़े और कृष्णागंग से रायचूरतक।) रायचूरसे आरकोना तक ३=॥) आरकोना से शिवकांची तक

)≡ शिवकांची से जंगलपेट तक ।) जंगलपेट से सि-
डम्बर महादेव तक १।) सिडम्बर महादेव से त्रिचना
पलीतक १) त्रिचनापली से श्रीरंग तक)≡ श्रीरंग
से मदरा तक १)≡ मदरातक कुल २४॥)=। किराया
लगताहै बाक़ी मदरासे रामनाथपूर तक बैलगाड़ीकी
डाकहै उसमें फी आदमी एक रूपिया लगताहै वह
एक रातदिन में रामनाथपूर को पहुंचाती है आगे
बालूका रेतहै इससे चाहे गाड़ी किरायाकी करेचाहे
पैदल जावे चौदह कोस ज़मीन चलना पड़ती है तब
श्रीरामेश्वरनाथ के दर्शन होते हैं॥

इतिसेतु बंधाश्रम यात्रादर्पण संपूर्णम्

मुंशी नवलकिशोर (सी, आई, ई) के छापेखानेमें छपी

अक्टूबर सन् १८८९ ई०